14

प्रभु के आने की प्रतिज्ञा याद रखो (2 पतरस 3:1–18)

यीशु के चेलों को कुछ समझ नहीं थी कि उसके जी उठने के बाद जैतून पहाड़ पर उससे मिलने के समय उससे क्या उम्मीद रखें। चेलों के आश्चर्यचकित होकर देखते देखते प्रभु स्वर्ग की ओर ऊपर उठाया जाने लगा। लूका ने उनके पास खड़े सफेद कपड़े पहने दो पुरुषों की बात लिखी है। उन्होंने कहा, ''हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो ? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा'' (प्रेरितों 1:11)। सफ़ेद वस्त्र पहने पुरुषों ने यह प्रतिज्ञा की थी इस कारण प्रभु की वापसी के समय और ढंग से बढ़कर कुछ विषयों में अधिक दिलचस्पी या विवाद पैदा हुआ है। यह नये नियम के लिखे जाने के समय भी सत्य था, जैसा कि थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस के पत्रों से पता चलता है। थिस्सलुनीके की कलीसिया में उसकी वापसी के समय का अनुमान लगाते हुए कइयों ने काम बन्द करके उसके प्रकट होने तक बेकार बैठ गए थे (1 थिस्सलुनीकियों 5:1–3; 2 थिस्सलुनीकियों 2:1, 2; 3:6–12)।

पिछली शताब्दी में हज़ार वर्ष के राज्य के विभिन्न रूपों की शिक्षा कई कलीसियाओं में दी गई है। जटिल समयसारणियों के साथ विद्वान लोग रैक्चर, हार्मिगदोन के युद्ध, मन्दिर के फिर से बनाए जाने और ऐसे अन्य विषयों पर चर्चा करते हैं। अन्तिम समयों पर सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तकें, फिल्में, और लैक्चर प्रभु की वापसी में पाई जाने वाली गहरी दिलचस्पी की पुष्टि करते हैं। यह ऐसी दिलचस्पी है जो लगभग दो हज़ार वर्षों से ज्यों की त्यों बनी हुई है।

2 पतरस में प्रेरित ने अपने पाठकों को मसीह के द्वितीय आगमन के बारे में बताया। कइयों को शक था कि वह कभी नहीं आएगा। पतरस ने अपना दूसरा पत्र इस पुष्टि के साथ बन्द किया, प्रभु अचानक प्रगट होगा, जब ठट्ठा करने वालों को उम्मीद भी नहीं होगी, ताकि अधर्मी लोगों का न्याय करे।

ठट्ठा करने वाले जान-बूझकर भूल जाते हैं (3:1-7)

अपने पत्र में पतरस ने अपने पाठकों को याद रखने के लिए झण्झोड़ने की अपनी इच्छा तय की (1:12, 13; 3:1)। सामान्य अर्थ में दोनों पत्र हर मसीही को ''सुधि दिलाकर उसके शुद्ध मन को उभारते हुए'' (3:1) हिलाना था, परन्तु एक विशेष विषय वह अपने पाठकों को याद लिाना चाहता था जिसकी बात नबियों और प्रेरितों ने की थी (3:2)। कुछ लोगों ने सवाल और संदेह किए थे। जिस कारण उन्हें याद दिलाया जाना आवश्यक था कि प्रभु के आने की प्रतिज्ञा मसीही शिक्षा का आधार था। मसीह के चेलों को इस उम्मीद में जीवन बिताना है कि प्रभु शीघ्र लौटेगा। यानी उन्हें इसकी उम्मीद करनी है न कि मांग। यदि वह अपने आने में एक हज़ार वर्ष

की देरी करता है तो इससे उन्हें निराश नहीं होना चाहिए। उन्होंने इस प्रकार से जीवन बिताया है जैसे वह आज भी आ जाएगा।

उस दृष्टांत के बीच जिससे मत्ती 24 समाप्त होता है और जिससे मत्ती 25 का आरम्भ होता है, हम बहुत छोटे परन्तु महत्वपूर्ण विचार को बदलते देखते हैं। मत्ती 24:45-51 वाले दुष्ट सेवक को अपने स्वामी के वापस आने में देरी की उम्मीद थी। जब वह आनन्द और जीवन के एशो-आराम में डूबा था तो उसका स्वामी लौट आया और उसने उसे कपटियों के साथ ठहराया जहां ''रोना और दांतों का पीसना'' होना था (मत्ती 24:51)। दस कुंवारियों का दृष्टांत इसके बिल्कुल विपरीत है। पांच मूर्ख कुंवारियों को दुल्हे के जल्द आने की उम्मीद थी, पर वह देर में आया। 1 और 2 पतरसके बीच ऐसा ही बदलाव पर ज़ोर मिलता है। 1 पतरस में प्रभु की सनिकट वापसी का दृश्य दुख सह रहे मसीही लोगों के लिए तसल्ली थी जबकि 2 पतरस में तुरन्त वापसी की उनकी उम्मीद पर खरा न उतरने के कारण कलीसिया में संदेह पैदा हो गया था।

सम्भवतया 2 पतरस 2 में पतरस ने जिन झूठे शिक्षकों की बात की वे उन ठट्ठा उड़ाने वालो में थे जो कहते थे, ''उसके आने की प्रतिज्ञा कहां गई?'' (3:4)। पतरस ने उन्हें याद दिलाया कि परमेश्वर जिसने संसार को अस्तित्व में लाया था न्याय करने के लिए इसे बुलाने में सक्ष्म है (3:5)। उसने इसे पहले एक बार न्याय के लिए बुलाया था। जल प्रलय से प्राचीन जगत को धोकर शुद्ध किया गया था। परमेश्वर के वचन ने नूह की पीड़ी को चेतावनी दी थी। उन्होंने सुनने से इनकार कर दिया था। जिस कारण उनका न्याय हुआ था (3:6)। पतरस ने कहा कि वही परमेश्वर जिसने जल प्रलय के पहले के संसार का न्याय किया था उसने वर्तमान संसार को आग के लिए ठहरा रखा है (3:7)। उसका वचन ''भक्तिहीन मनुष्यों के न्याय और नाश होने के दिन तक'' आकाश और पृथ्वी को उसका वचन सम्भाले हुए है (3:7)।

प्रभु धैर्य रखे हुए है (3:8-10)

कई बार मैं उस प्रभाव या प्रभाव की कमी से निराश हो जाता हूं जो प्रभु की कलीसिया संसार पर डाल रही है। मसीह के संदेश पर ध्यान देने वाले बहुत कम लोग मिलते हैं। कई पुरुषों तथा स्त्रियों के लिए व्यावहारिक ईमानदारी को समर्पित होना बेकार की बात लगती है। लोगों के मनों और प्राणों के लिए शैतान युद्ध जीतता हुआ प्रतीत होता है। लाखों लोग शराब और नशे के भ्रमित संसार में रहते हैं। कामूकता और गर्भपात पर कोई काबू नहीं है जबकि अपराध और भ्रष्टाचार साल-दर-साल बढ़ता जाता है। पाप ने अपनी पहुंच कलीसिया में भी बना ली है।

इस धुंधली तस्वीर में अध्याय 3 का संदेश महत्वपूर्ण है। इस संसार पर शैतान की सामर्थ और शक्ति केवल भ्रम है। संसार परमेश्वर का है और अन्त में विजय भी उसी की है। जो लोग उसके वापस आने की राह देखते और उम्मीद करते हैं वे अनन्तकाल तक उसके साथ राज करेंगे। संसार और जो कुछ इसमें है उन सब का न्याय होगा और उन्हें आग में भस्म किया जाएगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:6-10)। उस घटना की तुलना में वर्तमान का संसार युद्ध के पूर्व की भिडन्त जैसा है। यदि उसके आने में देर हो जाए तो क्या होगा? पतरस के समय से बहुत पहले, मूसा ने कहा था, ''क्योंकि हजार वर्ष तेरी दृष्टि में ऐसे हैं, जैसा कल का दिन जो बीत गया, या रात का एक पहर'' (भजनसंहिता 90:4; तुलना 2 पतरस 3:8)। मनुष्य परमेश्वर को

समय सारणी में नहीं बांध सकता। यदि परमेश्वर ने कहा कि मसीह वापस आकर संसार का न्याय करेगा, तो हम पक्का मान सकते हैं कि वह करेगा। यदि न्याय के दिन में देरी होती है तो यह इस लिए है क्योंकि उसकी धैर्यपूर्ण दयालुता उसके संसार को मन फिराव का समय दे रही है (3:9)।

पतरस ने यह लिखते हुए कि ''प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा'' (3:10) पुराने नियम के नबियों की बात याद दिलाई। यशायाह ने लिखा था, ''क्योंकि सेनाओं के यहोवा का दिन सब घमण्डियों और ऊंची गर्दनवालों पर और उन्नति से फूलने वालों पर आएगा; और वे झुकाए जाएंगे'' (यशायाह 2:12), और ''जब यहोवा पृथ्वी के कम्पित करने के लिये उठेगा, तब उसके भय के कारण और उसके प्रताप के मारे लोग चट्टानों की गुफाओं और भूमि के बिलों में जा घुसेंगे'' (यशायाह 2:19)। यशायाह 13 प्रभु के दिन को बाबुल के विरुद्ध न्याय के दिन के रूप में बताता है जबकि यशायाह 34:8 अदोम के विरुद्ध। यिर्मयाह 46:10 कहता है कि प्रभु के दिन मिस्र को परमेश्वर के क्रोध का सामना करना पड़ेगा। आमोस 5:18 और सपन्याह 1:7 कहता है कि प्रभु के दिन इस्राएल के विरुद्ध परमेश्वर का न्याय होगा। नबियों के लिए प्रभु का दिन कोई भी दिन था जब परमेश्वर ने बड़ी शक्ति से न्याय करते हुए अपने आपको निर्दोष सिद्ध किया। 1 थिस्सलुनीकियों 5:2 और 2 पतरस 3:10 में, यह परमेश्वर का अन्तिम न्याय का दिन है, जब सब लोग मसीह के न्याय सिंहासन के सामने प्रकट होंगे (2 कुरिन्थियों 5:10; रोमियों 2:6-8)।

यीशु और पौलुस ने भी कहा कि प्रभु का दिन चोर की नाईं आएगा (मत्ती 24:42-44; 1 थिस्सलुनीकियों 5:2)। प्रभु की तुरन्त वापसी की उम्मीद (1 पतरस 4:7; याकूब 5:8) और चोर की नाईं उसके वापस आने की उम्मीद में बहुत कम अन्तर है। दोनों ही मामलों में प्रभु के लोगों के लिए तैयार रहना और उम्मीद में जीना है। प्रभु के आने पर उसका शक्तिशाली न्याय अन्तिम और पूर्ण होगा। पृथ्वी, आकाश, समुद्र तथा प्रकृति के सभी तत्व नष्ट कर दिए जाएंगे।

3:10 के अन्तिम शब्द कठिन हैं। NASB में इसका अनुवाद ''इसके काम जल जाएंगे'' है, परन्तु NIV में ''जो कुछ इसमें है वह सब खोला जाएगा'' है। दोनों अनुवादों के बीच दो अलग अलग यूनानी शब्द हैं। 2 पतरस की कुछ प्राचीन प्रतियों में वह शब्द है जिसका अर्थ ''जल जाना'' है। जबकि अन्यों में वह शब्द है जिसका अर्थ ''पाया जाएगा'' है। यह तय करना कठिन है कि पतरस ने वास्तव में कौन सा शब्द लिखा परन्तु यदि उसने ''पाया जाएगा'' इस्तेमाल किया तो NIV का अनुवाद सही है। यूनानी शब्द का इस्तेमाल 1 कुरिन्थियों 3:13 के अर्थ में किया गया है, जो कहता है कि अन्त के दिन हर मनुष्य का काम ''प्रगट हो जाएगा'' और ''आग के साथ प्रगट होगा।'' ''पाया जाना'' का अर्थ तलाश होना, प्रगट होना या सामने लाना हो सकता है। अन्य अनुवादों में अन्तिम भाग का अनुवाद साहित्य प्रश्न के रूप में हुआ है: ''और पृथ्वी और वे काम जो इसमें हैं-क्या वे पाए जाएंगे?''

कइयों ने इस आयत का इस्तेमाल इस शिक्षा के समर्थन के प्रयास के लिए किया है कि पृथ्वी नष्ट नहीं होगी बल्कि अन्त के दिन केवल इसकी मरमत की जाएगी। संदर्भ में यह व्याख्या नहीं मिलेगी। पतरस कह रहा था कि पृथ्वी और संसार जैसा कि हम इन्हें जानते हैं प्रभु के वापस आने पर नहीं रहेंगे। ''आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा और तब बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे'' को समझने का कोई और ढंग नहीं है।

आपको कैसे लोग होना चाहिए (3:11-18)

पतरस मसीही लोगों को समय के अन्त की बात याद दिलाकर उनके मनों में भय उत्पन्न नहीं करना चाहता था। केवल अविश्वासी तथा दुष्ट को ही डरने की आवश्यकता थी। पतरस और उसके पाठकों के लिए यह जानना कि वर्तमान संसार की व्यवस्था खत्म हो जाएगी उन्हें पवित्र और भक्तिपूर्ण जीवन बिताने के लिए दृढ़ निश्चय करने के लिए ही था। "... तो तुम्हें ... कैसे मनुष्य होना चाहिए, और परमेश्वर के उस दिन की बाट किसी रीति से जोहना चाहिए?" पतरस ने पूछा (3:11, 12)। मसीह की वापसी के बारे में लिखते हुए 1 थिस्सलुनीकियों 5:1–5 में पौलुस ने भी ऐसी ही ताड़ना दी। भक्तिपूर्ण जीवन बिताकर मसीही लोग प्रभु के लिए तैयार रहते हैं कि यदि वह अचानक आ जाए, तो वे उसके प्रगट होने की राह देखते हैं (यानी वे पूर्वाभास के साथ इसकी राह देखते हैं)।

कई लोग पूछते हैं, "आकाश और पृथ्वी के नष्ट हो जाने के बाद, परमेश्वर के लोग कहां रहेंगे?" पतरस ने कोई विस्तृत व्याख्या देने का प्रयास नहीं किया। इसका उत्तर परमेश्वर की सर्वव्यापक और सामर्थ में छुपा हुआ है। इतना जान लेना काफ़ी है कि परमेश्वर एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी देगा, जो इस वर्तमान संसार से बिल्कुल अलग होगें। उस आकाश और पृथ्वी में धर्मी लोग वास करेंगे। पतरस का रूपक स्पष्ट था, यदि प्रकाशितवाक्य 21:1–4 में यूहन्ना के शानदार और नाटकीय रूपक जैसे नहीं था।

पतरस की अन्तिम टिप्पणियों में पवित्र जीवन बिताने की ताड़ना दोहराई गई। मसीही लोगों के लिए उसके साथी जीवन के लिए अपने आपको तैयार करना है जब सब बातें नईं जो जानी थीं और मनुष्य का पुत्र अपने तेजोमय सिंहासन पर बैठेगा (मत्ती 19:28)। जैसे प्रभु स्वयं "निर्दोष और निष्कलंक मेमने" था (1 पतरस 1:19), पतरस ने मसीही लोगों से "निष्कलंक और निर्दोष" होने का आग्रह किया (3:14)। उसके शब्द झूठे शिक्षकों से जानबूझकर अलग किए गए हो सकते हैं जो "कलंक और दोषी" थे। उसके आने की जिज्ञासापूर्वक प्रतीक्षा करते हुए, विश्वासियों के लिए यह याद रखना आवश्यक था कि उसके आने में देर होने से दूसरों को सुसमाचार सुनने, उद्धार पाने और चुने हुओं में शामिल होने का अवसर मिलना था।

नये नियम के अन्य लेखों के अधिकार तथा प्रेरणा का एक गवाह 3:15 में मिलता है। पौलुस ने पहला पत्र जो हमारे पास पहुंचा, 1 थिस्सलुनीकियों 51 ईस्वी के आस पास लिखा, यानी 2 पतरस के लिखे जाने से लगभग 15 साल पहले। इसके अलावा पत्र लिखते समय पतरस यदि रोम में था, जो हम मानते हैं कि था, तो पौलुस ने उस नगर की कलीसिाय के नाम अपना पत्र लगभग आठ साल पहले लिखा था। हमें नहीं मालूम कि पौलुस के पत्र कब, कैसे या किसने इकट्ठे किए, परन्तु 2 पतरस के लिखे जाने से भी पहले, पतरस और उसके पाठक पौलुस के पत्रों से परिचित रहे हो सकते हैं।

पतरस की बात की अनपढ़ और चंचल लोग पौलुस की लिखी बातों को बिगाड़ते हैं यह संकेत दे सकती है कि अध्याय 2 में वर्णित झूठे शिक्षकों ने अपनी गलत शिक्षा के समर्थन के लिए पतरस के पत्रों में लिखी बातों का इस्तेमाल करने का प्रयास किया था। पतरस ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह और पौलुस एक ही काम को करने वाले भाई हैं। "पौलुस ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला" था प्रभु के आने तथा पवित्र और भक्तिपूर्ण जीवन बिताने की

आवश्यकता के बारे में लिखा था (3:15, 16)।

3:15, 16 में पतरस ने पौलुस की लिखी किस पत्री या आयत की बात की यह कहना कठिन है। कुलुस्सियों, इफिसियों और गलातियों की पत्रियां एशिया माइनर की कलीसियाओं के नाम लिखी गई थीं। एशिया की कलीसियाएं कलीसियाओं को फिलिप्पी, थिस्सलुनीके तथा कुरिन्थुस की कलीसियाओं के पत्रों का पता आसानी से चल जाता होगा। इसके अलावा पौलुस के तीमुथियुस को लिखने के समय वह इफिसुस में था और तीतुस क्रेते नामक टापू के पास। महत्वपूर्ण बात यह है कि पतरस और उसके पाठकों को पौलुस के कम से कम कुछ पत्रों का पता था और वह उन्हें ''पवित्र शास्त्र की अन्य बातों'' की तरह ही अधिकारात्मक मानते थे। बेशक पौलुस ने स्वयं इस बात की पुष्टि की कि उसके वचनों में अधिकार था क्योंकि वे आत्मा के द्वारा दिए गए थे (1 कुरिन्थियों 2:13; इफिसियों 3:5)।

अफसोस की बात है कि समय के हर काल में मसीही लोगों के लिए ''अधर्मियों के भ्रम में फंसने'' से बचना आवश्यक है (3:17)। मसीही लोगों के लिए बताई गई बुनियादी सच्चाइयां, आज्ञाएं और जीने का ढंग पढ़ने वाले हर व्यक्ति के लिए नये नियम में दिया गया है। परन्तु इस सुरक्षित स्थिति से अनेक मसीही लोग उन लोगों द्वारा भटकाए गए हैं जो पौलुस तथा नये नियम के अन्य लेखकों द्वारा लिखी गई ''बातें जिन्हें समझना कठिन है'' (3:16) में विशेषज्ञ हैं। मसीही लोगों को ऐसे शिक्षकों से सावधान रहने की आवश्यकता है जो पवित्र शास्त्र की स्पष्ट और आसानी से समझ आने वाली शिक्षाओं को कठिन तथा कम समझ आने वाले वचनों की अपनी ही व्याख्या करते हैं। बहुत से मसीही लोग दानिय्येल के सत्तर सप्ताहों की चट्टानों, जकर्याह के रात के दर्शनों और प्रकाशितवाक्य की प्रतिकात्मक भाषा में गिरकर कुचले गए हैं।

सारांश

2 पतरस के अन्तिम अध्याय में प्रभु के अद्वितीय आगमन के नये नियम के सबसे स्पष्ट विवरणों में से एक है। पतरस ने उस संदर्भ में मसीह के द्वितीय आगमन की आशा को जीवित रखा। जिससे मसीही लोगों को उसके देरी से आने की बात से निपटने में सहायता मिली, चाहे यह देर कितनी भी हो सकती है। उसने यह सुझाव नहीं दिया कि उन्हें उसके तुरन्त वापस आने की आशा छोड़ देनी चाहिए। प्रभु के वापस आने की उम्मीद का एकमात्र ढंग इसे शीघ्र आने की उम्मीद करना है। उसके शीघ्र आने की उम्मीद करने का अर्थ यह मांग करने की तरह नहीं है कि प्रभु मानवीय समय के ढांचे में अपने आपका ढाल लेगा। मसीही व्यक्ति का विश्वास है कि प्रभु वापस आएगा।